ग़ज़ल -02

-रविशंकर श्रीवास्तव

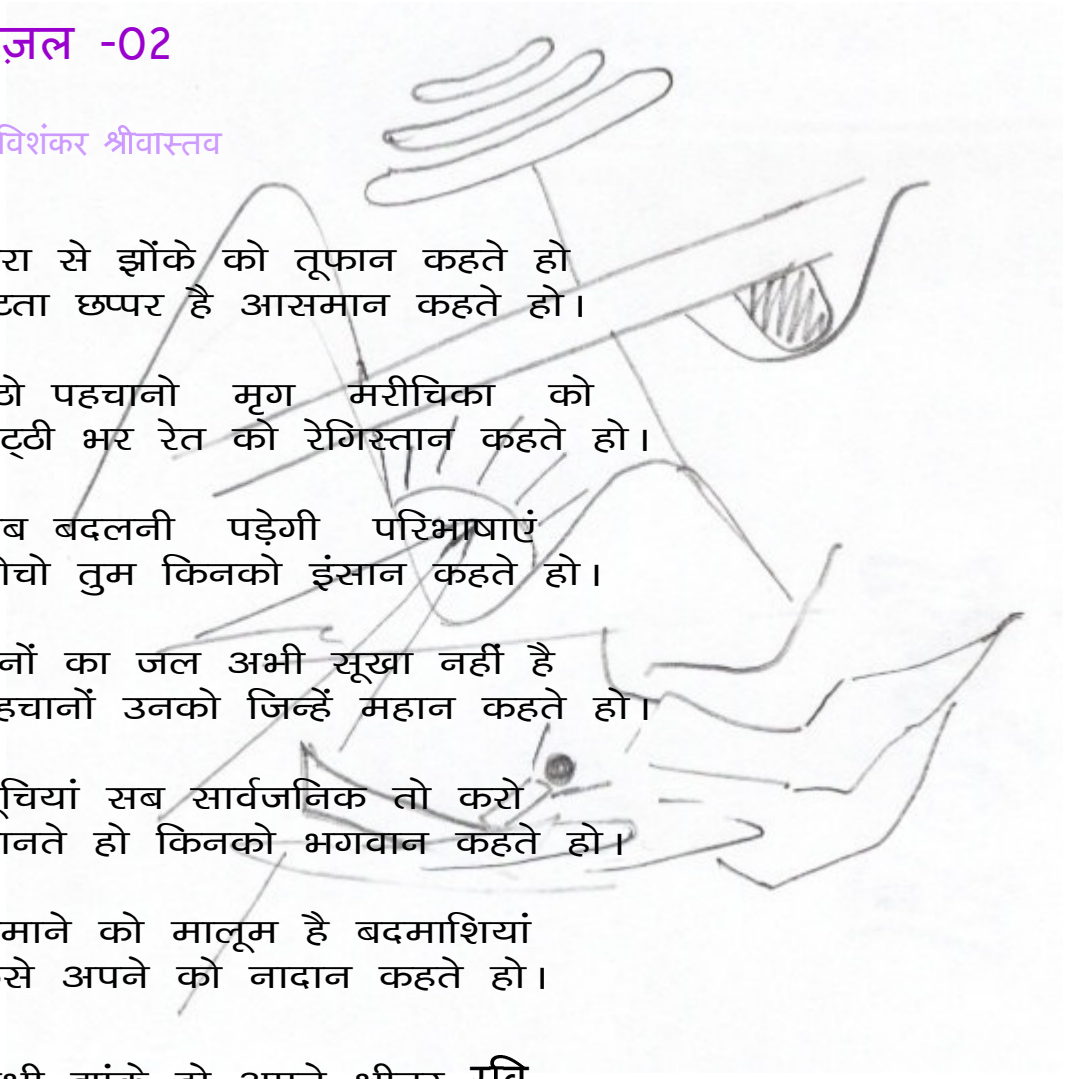

जरा से झोंके को तूफान कहते हो
टूटता छप्पर है आसमान कहते हो।

उठो पहचानो मृग मरीचिका को
मुट्ठी भर रेत को रेगिस्तान कहते हो।

अब बदलनी पड़ेगी परिभाषाएं
सोचो तुम किनको इंसान कहते हो।

नैनों का जल अभी सूखा नहीं है
पहचानों उनको जिन्हें महान कहते हो।

सूचियां सब सार्वजनिक तो करो
जानते हो किनको भगवान कहते हो।

जमाने को मालूम है बदमाशियां
कैसे अपने को नादान कहते हो।

कभी झांके हो अपने भीतर **रवि,**
औरों को फिर क्यों शैतान कहते हो।

100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,

रतलाम म.प्र. 457001